Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

संस्कृत भाषा में स्मरण का महत्त्व

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य (शिक्षापीठ)
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली।

Article Info
Volume 4 Issue 5
Page Number : 143-147

Publication Issue :
September-October-2021

Article History
Accepted : 01 Sep 2021
Published : 15 Sep 2021

शोध सार (Abstract)–"संस्कृतं नाम दैवी वाक् अन्वाख्याता महर्षिभि:" यह उक्ति हमें निश्चितरूप से संस्कृत के गौरवशाली स्थान को स्मरण कराती है। यही नहीं हमें उन ऋषियों महर्षियों एवं महान् विद्वान विभूतियों की भी याद दिलाती है, जिन्होंने इसे संरक्षित किया एवं परिवर्धित किया है। वस्तुत: संस्कृत शिक्षा वैदिक काल से चलती आ रही है। यह शिक्षा पहले से ही आश्रम पद्धति में अथवा गुरुकुलीय प्रणाली का एक अंग थी। संस्कृत भाषा तो उद्गम स्थल का स्त्रोत बना हुआ पानी शिलाओं का विदीर्ण करते हुए महानदी का आकार ले लेता है। अत: कहा जा सकता है कि तुलनात्मक नजरिये से संस्कृत भी कभी सीमित दायरे में नही थी, क्योंकि संस्कृत भाषा का मनुष्य के जीवन से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक की सभी क्रियाओं से सम्बन्ध होता है। यह उपासना स्थलों पर हमेशा गूँजती रहती है। वस्तुत: संस्कृत शिक्षा की वर्तमान परिस्थिति को यदि आंका जाय तो आज भी आंग्ल भाषायी बाहुल्य देश में यह हमारे सामने असहाय प्रतीत होती है।क्योंकि आजकल के विद्यार्थी विषय के स्मरण में विश्वास नहीं रखते, उनका मानना है कि विषयवस्तु को समझना जरूरी है, कण्ठस्थ करना नहीं। लेकिन संस्कृत भाषा के अध्ययन में विषय अवगाहन के साथ मुख्य तथ्यों को प्रमाणित करने के लिए स्मरण रखना भी अत्यावश्यक है। अत: संस्कृत भाषा शिक्षण में 'स्मरण' को पूर्णत: निष्कासित नहीं किया जा सकता। इस शोधपत्र में हम संस्कृत भाषा की विभिन्न विधाओं में स्मरण के महत्त्व को जानेंगे।

मुख्य शब्द:– संस्कृत, भाषा, स्मरण, अध्ययन, शिक्षण, विधा।

भूमिका- वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृताधार्यते।

वर्तमान में संस्कृत शिक्षा की स्थिति बहुत ही चिन्तनीय तथा दयनीय बनी हुई है। संस्कृत का नाम सुनते ही लोग मुँह फेर लेते हैं। शायद उन्हें यह जानकारी नहीं है कि जिस भाषा ने हमें संसार में स्थान दिया है, वह संस्कृत भाषा ही है। जिस प्रकार समाज में आज कई लोग अपने बुजुर्ग माता–पिता को अपने से अलग कर वृद्धाश्रम में भेज देते हैं, ठीक उसी प्रकार अन्य भाषाएँ भी अपनी जननी संस्कृत को छोड़ रहे हैं। जिस संस्कृत ने भारत को विश्वगुरु होने का सम्मान दिया, अवसर दिया, वही आज अपने अस्तित्व को खोज रही है। कारण कोई समझना नहीं चाहता, स्मरण नहीं करना चाहता, सिर्फ तकनीकी प्रयोग दक्षता चाहता है। जबकि वह नहीं जानता कि जो बात पहले सीखी जा चुकी है, उसे स्मरण रखना ही स्मृति है। स्मृति एक जटिल शारीरिक और मानसिक प्रक्रिया है जब हम किसी वस्तु को देखते या सुनते हैं, तब हमारे ज्ञान–वाहक

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

तन्त्र उस अनुभव को हमारे मस्तिष्क के ज्ञान केन्द्र में पहुँचा देते हैं। ज्ञान केन्द्र में उस अनुभव की प्रतिमा बन जाती है। उस अनुभव को अचेतन मन में संचित रखने और चेतन मन में लाने की प्रक्रिया को स्मृति कहते हैं। स्मरण की पूर्व क्रिया के चार अंग पद या खण्ड होते हैं। सीखना, धारणा, पुन: स्मरण और पहचान।

जब हम कोई नवीन बात सीखते हैं या नवीन अनुभव प्राप्त करते हैं तब हमारे मस्तिष्क में उसका चित्र अंकित हो जाता है। दर्शन की भाषा में इसे अवग्रह कह सकते हैं। अर्थावग्रह में चेतना उद्दीप्त होती है तथा संवेदना की प्रतीति होती है। ईहा में मन में ज्ञेय वस्तु का विवरण जानने की अभिलाषा होती है। अवाय में ज्ञेय वस्तु की पहचान होती है, धारणा के द्वारा हम पदार्थ के गुणों का बोध करते हैं, इसके कारण ही हमें पदार्थ का स्मरण होता है।

इस प्रकार अवग्रह, अर्थावग्रह, ईहा, अवाय और धारणा से प्राप्त ज्ञान को स्मृति की सहायता से अपनी चेतना में फिर लाकर उसका स्मरण कर सकते हैं। स्मृति का प्रमुख कार्य है– पूर्व अनुभवों का अचेतन मन से आवश्यकता पड़ने पर चेतन मन में लाना।

सीखने की प्रक्रिया सतत् है तथा इस प्रक्रिया में पूर्वापर सीखी गयी विषयवस्तु का स्मरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि जो कुछ पूर्व में सीखा गया है वह एक ऐसा आधार प्रदान करता है जिस पर आगे सीखा जाने वाला ज्ञान सुदृढ़ रूप से आधारित हो सके।

शिक्षक विद्यार्थी को स्मरण शक्ति के आधार पर ही विषयवस्तु का ज्ञान प्रदान कर सकता है। विद्यार्थी भी विषय पर स्वामित्व अधिगम तभी कर सकता है जब उसे पूर्व में सीखे गये पाठ का स्मरण हो। नियमों, सिद्धान्तों, वर्णों, समय, काल, गणना आदि पूर्व में सीखी गई बातों को स्मरण में रखना ही होगा। तभी नवीन विषयवस्तु का ज्ञान किया जा सकेगा।

संस्कृत भाषा की आद्य कृतियाँ गुरु द्वारा शिष्य को स्मरण शक्ति के माध्यम से ही हस्तान्तरित की गयी वे पुस्तक में लिपिबद्ध नही थीं अपितु आद्योपान्त सस्वर स्मृति पटल पर अंकित थीं। प्राचीन संस्कृत साहित्य में निबद्ध मन्त्र उदात्त, अनुदात्त और स्वरित स्वरों में बँध हुए होते थे। स्वरों के आधार पर ही इनका उच्चारण होता था। अत: प्राचीन ऋषियों ने इन वेद मन्त्रों को लिखित स्वरूप प्रदान करने की अपेक्षा मौखिक रूप से वाचन करवाने और उस विशिष्ट उच्चारण से उनका अर्थ समझाकर धारण करने की विधि को अधिक उपयुक्त समझा, क्योंकि वैदिक मन्त्रों का यदि स्वर परिवर्तन कर वाचन किया जाता तो वह अनर्थ का कारण बन सकता था। कहा भी है–

दुष्टो मन्त्र: स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।

स वाग्वज्रं यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रु: स्वरतोऽपराधात्॥

प्राचीन संस्कृत साहित्य के सन्दर्भ में एक आख्यायिका प्रचलित है कि 'इन्द्रशत्रुर्विवर्द्धस्व' पद में मात्र एक स्वर के गलत उच्चारण से अर्थ का अनर्थ हो गया। क्योंकि एक शब्द को यदि उदात्त स्वर से उच्चरित किया जाता तो वह भिन्न अर्थ देता और स्वरित स्वर को ध्यान में रखकर उच्चारण किया जाए तो वह पृथक् अर्थ को प्रदान करता है। अत: ग्रन्थ रूप में लिखित वेद–मन्त्रों को पढ़कर शिष्य आचार्य के सानिध्य के अभाव मे उसका वास्तविक अर्थ निकाल सकने में असमर्थ भी हो सकते थे।

अत: प्राचीन काल में मन्त्रों का सस्वर–पाठ कराते हुए पारायण विधि द्वारा उनका स्मरण कराया जाता था। आचार्य वेद–मन्त्रों का सस्वर पाठ करते थे शिष्य उस पाठ का अनुकरण करते थे। इस प्रकार शुद्ध उच्चारण सहित वेदों के मन्त्र आचार्य द्वारा शिष्यों को कण्ठस्थ करा दिये जाते थे। साथ–साथ आचार्य उन वेद मन्त्रों का अर्थ तथा आशय भी शिष्यों

को सुनाते चलते थे। श्रवण द्वारा इस प्रकार प्राप्त ज्ञान श्रुति कहलाया तथा शिष्यों द्वारा जब उस ज्ञान को स्मरण शक्ति के आधार पर कालान्तर में उद्धृत किया गया तो उनकी व्याख्याएँ 'स्मृतियों ' के नाम से लोकप्रिय हुई।

ऋषियों के आश्रम में वैदिक ज्ञान की यह परम्परा बाद में गुरुकुल में भी प्रचलित रही। इस परम्परा के अन्तर्गत न केवल कुशाग्र बुद्धे अपितु प्रखर स्मरण शक्ति को भी आवश्यक माना गया क्योंकि जहाँ बुद्धि ज्ञान प्राप्ति में सहायक है वहीं पर स्मरण शक्ति उसकी धारणा और उस ज्ञान के उपयोग के लिये आवश्यक है। यह आवश्यकता प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक अनुभव की जाती रही है यही कारण है कि आज भी संस्कृत शिक्षण में स्मरण का महत्त्व पूर्ववत् है।

संस्कृत भाषा में स्मरण का महत्त्व– संस्कृत भाषा संश्लेषणात्मक एवं व्याकरणनिष्ठ भाषा है, इस भाषा का प्रत्येक पद अपने क्रियात्मक विकारों को साथ लेकर चलता है तथा इस भाषा का प्रत्येक पद अपने विशिष्ट नियमों में बँधा हुआ होता है। अत: इन पदों का प्रयोग बिना स्मरण सम्भव नहीं है।

संस्कृत सूत्रों या नियमों में पूर्वापर सम्बन्ध होता है, हमें पूर्व के सूत्रों, नियमों को स्मरण में रखना होता है जिनके आधार पर आगे के सूत्रों की व्याख्या सम्भव होती है जैसे- 'अक: सवर्णे दीर्घ:' इस सूत्र की व्याख्या तभी सम्भव है जब हमें पूर्व-पठित माहेश्वर सूत्रों एवं प्रत्याहारों का ज्ञान हो। अक् प्रत्याहार में कौनसे वर्ण आते हैं? यह स्मरण होने पर ही इस सूत्र को समझा जा सकेगा। संस्कृत भाषा की प्रत्येक विद्या का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करना स्मरण पर ही आधारित है।

संस्कृत गद्य में स्मरण का महत्त्व– संस्कृत गद्य संश्लिष्ट शैली से युक्त है। यह समास, सन्धि, अलंकार एवं वर्णन चमत्कृति से परिपूर्ण होता है। गद्य बोधगम्य शैली कथोपकथन शैली, वर्णनात्मक शैली, तार्किक-शैली, सूत्र या संक्षिप्त शैली, व्यास-शैली तथा समासयुक्त शैली से युक्त होता है। गद्य का प्रयोग, कथा, नाटक, कथोपकथन, वर्णन, जीवनी, संस्मरण, आलोचना, समाचार आदि अलग-अलग विधाओं के लिए होता है। संस्कृत गद्य पाठ से ही छात्रों को संस्कृत शब्दावली तथा व्याकरण के विभिन्न नियमों के प्रयोग का ज्ञान होता है। संस्कृत गद्य का एक छोटा सा वाक्य बिना स्मरण के नहीं लिखा जा सकता है, जैसे- बालका: विद्यालयम्----------प्रस्तुत वाक्य में क्रिया का क्या रूप होगा? यह वाक्य तभी पूरा किया जा सकेगा जब यह स्मरण में हो कि बालका: कर्ता के साथ क्रिया किस पुरुष या वचन की होगी तथा यह भी स्मरण में हो कि 'जाना' क्रिया के लिये संस्कृत की किस धातु का प्रयोग होगा? तभी इस वाक्य को पूरा किया जा सकेगा।

संस्कृत पद्य में स्मरण का महत्त्व–संस्कृत पद्य छन्द, अलंकार, शब्दशक्ति, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि, लय, गति एवं यति से युक्त होता है। अत: पद्य-पाठ का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने के लिए स्मरण का विशेष महत्त्व है। शिक्षक पद्य का समुचित ज्ञान तभी करा सकता है जब वह स्वयं श्लोकों का उचित स्वर, लय, ताल, स्वराघात, गति, यति पूर्वक पाठ कर सके तथा श्लोक में निहित छन्द, अलंकारों, शब्दशक्ति, शब्द वैचित्र्य, रस आदि सम्यक् स्मरण हों।

स्मरण के माध्यम से ही छात्र पठित काव्यों का उपयुक्त सन्दर्भों में प्रयोग कर सकते हैं। पठित श्लोकों द्वारा अपनी भाषा को प्रभावी बना सकते हैं। संस्कृत के नीति-परक, उपदेशात्मक, हितकारी, सुबोध, सौन्दर्यात्मक श्लोकों को कण्ठस्थ कर जीवन के उन्नयन हेतु एक विशिष्ट मार्ग का अवलम्बन कर सकते हैं, इन श्लोकों द्वारा अपने रचना-कार्य को प्रभावी बना सकते हैं। तथा अपनी अभिव्यक्ति से दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं।

संस्कृत व्याकरण में स्मरण का महत्त्व– वह विद्या या शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शुद्ध रूपों और वाक्यों के प्रयोग के नियमों का निरुपण होता है व्याकरण है। स्मरण के बिना संस्कृत व्याकरण का शिक्षण एवं अध्ययन दोनों ही असम्भव है।

संस्कृत व्याकरण सूत्रात्मक है। ये सूत्र एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। सूत्रों की व्याख्या तभी की जा सकती है जब सूत्रों के पूर्वापर सम्बन्धों का सम्यक् ज्ञान हो।

संस्कृत शिक्षक को व्याकरण का अध्यापन कराते समय वर्ण, पद, वाक्य, विभक्ति, कारक, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय, गण्, धातु, उच्चारण स्थान, प्रयत्न, आदेश, लिङ्ग, वचन, पुरुष, लकार, उपसर्ग, सन्धि, समास, प्रत्यय, वाच्य आदि का ज्ञान देना होता है, जो अच्छी स्मृति के अभाव में सम्भव नहीं है। व्याकरण, भाषा में शुद्ध शब्दों का निर्माण, भाषा संरचना का अध्ययन, भाषा विश्लेषण करता है, सर्वमान्य नियमों को निर्धारित करता है, किसी विशेष अवसर पर भाषा का शुद्ध प्रयोग क्या है? इसका निरूपण करता है, भाषा को सुव्यवस्थित ढंग से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है ताकि भाषा में सरलता और बोधगम्यता आ सके।

संस्कृत रचना में स्मरण का महत्त्व– रचना एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ-क्षेत्र बहुत विस्तृत है। कथा, उपन्यास, निबन्ध, पत्र, नाटक, वर्णन, जीवन आदि लिखने के अतिरिक्त एक विशिष्ट शब्द-प्रयोग से लेकर महाभाष्य लिखने तक की समस्त प्रक्रिया में रचना में समाहित है।

लिखित रचना के लिए, अभिव्यञ्जना का विकास, सृजनात्मकता का विकास, लिपि का शुद्ध प्रयोग एवं लिपि की सभी जटिलताओं की जानकारी, वर्तनी का प्रयोग, विचारों को शुद्ध संस्कृत में व्यक्त करने की योग्यता, रचना में सुभाषितों एवं उद्धरणों के प्रयोग की क्षमता, वर्णनात्मक, विवरणात्मक एवं विचारात्मक विषयों पर प्रभावशाली रचना करने की योग्यता होनी चाहिए जो स्मरण बिना सम्भव नहीं है क्योंकि स्मरण के बिना न तो संस्कृत भाषा का शुद्ध प्रयोग किया जा सकता है और न ही रचना के वर्ण्य-विषय की प्रभावी प्रस्तुति की जा सकती है। अत: हम कह सकते हैं कि संस्कृत भाषा में प्रभावी रचना का आधार स्मरण है।

संस्कृत अनुवाद में स्मरण का महत्त्व– संस्कृत अनुवाद कार्य, भाषा सम्बन्धी नियमों एवं व्याकरण के नियमों पर आधारित है, अत: जब तक अध्ययन एवं अध्यापन करने वालों को ये सभी नियम स्मरण मे नहीं होंगे तब तक अनुवाद कार्य नहीं किया जा सकता है। संस्कृत का अनुवाद कार्य मातृभाषा से संस्कृत की ओर हो या संस्कृत से मातृभाषा की ओर हो दोनों प्रकारों से स्मरण का विशेष महत्त्व है।

संस्कृत नाटक में स्मरण का महत्त्व–'काव्येषु नाटकं रम्यम्' उक्ति के आधार पर काव्यों में नाटक इसीलिए रम्य कहा गया है क्योंकि यह अभिनय के माध्यम से दर्शनीय होता है, और अभिनेता मूल व्यक्ति को स्वयं में आरोपित कर धारा प्रवाह संवादों से दर्शकों का मन मोह लेता है। इस प्रकार स्मरण के आधार पर ही वार्तालाप, संवाद, भाषण, कथोपकथन आदि की प्रभावोत्पादक ढंग से अभिव्यक्ति की जा सकती है और नाटक को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

मूल्याङ्कन हेतु स्मरण की उपयोगिता– शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्याङ्कन के लिये स्मरण आवश्यक है। अध्यापक अध्यापन के पूर्व उद्देश्यों का निर्धारण करता है इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये अध्यापक व छात्रों के मध्य अन्त:क्रिया होती है। इन क्रियाओं के द्वारा अध्यापक छात्रों के व्यवहार में वाञ्छित परिवर्तन लाना चाहता है। छात्र के व्यवहार में जब तक अभीष्ट परिवर्तन नहीं होता तब तक अध्यापन कार्य को सफल नहीं समझा जा सकता। मूल्याङ्कन ही वह विधि है जिससे अध्यापक यह जाँच करता है कि छात्रों के व्यवहार में कितना परिवर्तन हुआ है? अथवा उसने कितना सीखा है। अत: छात्रों को मूल्याङ्कन की कसौटी पर खरा उतरने के लिये विषय-वस्तु को स्मरण में रखना होगा।

प्राचीन काल में भी मूल्याङ्कन का आधार स्मरण ही था। शास्त्रार्थ, तर्क-वितर्क, वाद-विवाद आदि स्मृति पर ही आधारित रहे। वर्तमान शिक्षा पद्धति में भी मूल्याङ्कन का आधार स्मरण ही है। परीक्षा चाहे लिखित हो अथवा मौखिक, प्रश्न निबन्धात्मक हों, वैकल्पिक हों, लघु-उत्तरात्मक हों, रिक्तस्थान सम्बन्धी, चयन सम्बन्धी, मिलान-सम्बन्धी हों

परीक्षार्थी के ज्ञान के मूल्याङ्कन का आधार मूलत: यह रहता कि उसे विषय–वस्तु कितनी अवबोधपूर्वक स्मरण में रहती है। कहा भी है– "कण्ठे विद्या अण्टे धनम्" अर्थात् कण्ठ में जो विद्या होगी समय पर वह ही काम आती है।

निष्कर्ष– संस्कृत भाषा के लिये यह कहना कि यह रटन्त विद्या पर बल देती है, तथा अमनोवैज्ञानिक है, उचित नहीं क्योंकि संस्कृत के समान प्रत्येक विषय का स्थायी ज्ञान प्राप्त करने के लिए तथा परीक्षा में अवबोध पूर्वक विषय स्मरण ही सफलता दिलाता है। मूल्याङ्कन में प्रयुक्त सभी प्रकार की विधियों में स्मरण की ही जाँच होती है। कहा भी है–

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्तगतं धनम्।

कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम्॥

अत: अध्ययन और अध्यापन में यह आवश्यक है कि विषयवस्तु का अवबोधपूर्वक ज्ञान ही जीवन की यथार्थ परिस्थितियों का सामना करने योग्य बनाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. पाण्डेय, डॉ. अरविन्द कुमार (2004), संस्कृत शिक्षा का विकास, आदित्य बुक सेन्टर, वाराणसी।
2. मित्तल, डॉ. सन्तोष (2010), संस्कृत शिक्षण, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
3. शर्मा, डॉ. नन्दराम (2007), संस्कृत शिक्षण, साहित्य चन्द्रिका प्रकाशन, जयपुर।
4. शर्मा, रीटा, जैन, अमिता (2005), संस्कृत शिक्षण, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर।